भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान
ICAR-Indian Institute of Soybean Research
खण्डवा रोड, इन्दौर–452001
Khandwa Road, Indore-452001

फाइल नं. **F.No. :** टेक **10-6/2020** दिनांक **Date: 01.06.2020**

सोयाबीन कृषकों के लिए उपयोगी सलाह / **Advisory for Soybean Farmers**

(01 से 07 जून 2020 / **01 to 07 June 2020)**

(अ) कोरोना वायरस की स्थिति में कृषि कार्य बाबत सावधानियाँः

1. कृषि कार्य करते समय 4 से अधिक व्यक्तियों को इकट्ठा ना होने दें तथा उनके बीच 2 मीटर की पर्याप्त दूरी रखें।
2. बुखार / सर्दी खांसी की स्थिति में अपने खेतों पर काम कर रहें श्रमिक / व्यक्तियों को चिकित्सकीय परामर्श की सलाह दें।
3. कोरोना वायरस से सुरक्षा हेतु अपने चेहरे पर मास्क / गमछा / रूमाल / कपड़ा लगाएं तथा हाथों में मौजे / ग्लब्स लगाना अनिवार्य करें।
4. कृषि कार्य करते समय मादक पदार्थ / तम्बाकू का सेवन ना करें।
5. समय–समय पर 20 सेकंड तक अपने हाथ साबुन से अच्छी तरह धोंये।

(ब) सोयाबीन की खेती हेतु सस्य क्रियाओं की सामयिक सलाहः

1. उत्पादन में स्थिरता की दृष्टि से 2 से 3 वर्ष में एक बार खेत की गहरी जुताई करना लाभप्रद होता है, अतः जिन किसान भाईयों ने खेत की गहरी जुताई नहीं की हो, कृपया अवश्य करें। उसके बाद बख्खर / कल्टीवेटर एवं पाटा चलाकर खेत को तैयार करें।
2. उपलब्धता अनुसार अपने खेत में 10 मीटर के अंतराल पर सब–सॉयलर चलाएं जिससे मिट्टी की कठोर परत को तोड़ने से जल अवशोषण / नमी का संचार अधिक समय तक बना रहे।
3. खेत की अंतिम बखरनी से पूर्व अनुशंसित गोबर की खाद (10 टन / हे.) या मुर्गी की खाद (2.5 टन / हे.) की दर से डालकर खेत में फैला दें।
4. अपने क्षेत्र के लिए अनुशंसित सोयाबीन किस्मों में से उपयुक्त किस्म का चयन कर बीज की उपलब्धता सुनिश्चित करें।
5. उपलब्ध सोयाबीन बीज का अंकुरण परीक्षण (न्यूनतम 70 प्रतिशत) सुनिश्चित करें।
6. बौवनी के समय आवश्यक आदान जैसे उर्वरक, खरपतवारनाशक, फफूंदनाशक, जैविक कल्चर आदि का क्रय कर उपलब्धता सुनिश्चित करें।
7. बौवनी के समय बीज उपचार के लिए अनुशंसित फफूंदनाशक जैसे – पेनफ्लूफेन + ट्रायफ्लोक्सीस्ट्रोबीन (1 मि.ली. / कि.ग्रा. बीज) अथवा थायरम + कार्बोक्सीन (3 ग्रा. / कि.ग्रा. बीज) अथवा जैविक फफूंदनाशक ट्राइकोडर्मा 10 ग्रा. / कि.ग्रा. बीज। तत्पश्चात् जैविक कल्चर ब्रेडीराइझोबियम जपोनिकम एवं स्फुर घोलक जीवाणु (पी.एस.एम.) की उपलब्धता सुनिश्चित कर लें।
8. पीला मोजाईक बीमारी की रोकथाम हेतु अनुशंसित कीटनाशक थायोमिथाक्सम 30 एफ.एस. (10 मि.ली. / कि.ग्रा. बीज) या इमिडाक्लोप्रिड 48 एफ.एस. (1.2 मि.ली. / कि.ग्रा. बीज) से बीज उपचार करने हेतु क्रय / उपलब्धता सुनिश्चित करें।
9. वर्षा के आगमन पश्चात्, सोयाबीन की बौवनी हेतु मध्य जून से जुलाई के प्रथम सप्ताह का उपयुक्त समय है। नियमित मानसून के पश्चात् लगभग 4 इंच वर्षा होने के बाद ही बुवाई करना उचित होता है। मानसून पूर्व वर्षा के आधार पर बौवनी करने से सूखे का लंबा अंतराल रहने पर फसल को नुकसान हो सकता है।

.....2,

(A) Precautions to be taken for prevention of Corona Virus:

1. While carrying out farm operations, do not assemble more than 4 persons and ensure the social distance of about 1 meter.
2. Advise the persons or labours to take the medical treatment in case of cold, cough, fever like symptoms.
3. While carrying out farm operations, please use protective mask or cover the face with gamchha/handkerchief/cotton etc and use hand gloves.
4. Avoid consumption of tobacco / liquor while doing the farm operations.
5. Do not forget to wash the hands for 20 seconds intermittently.

(B) Advisory for soybean agronomic practices:

1. In order to have stability in yield, it is important to carryout summer deep ploughing once in 2 to 3 year. Therefore, those farmer who have not performed deep summer ploughing are advised to go for deep summer ploughing followed by 2 criss-cross harrowings and planking in order to prepare seed bed.
2. Depending on the availability farmers are advised to use Sub-soiler at 10 meter interval in fields. It helps to break the hard-soil pan and thus increases rain water infiltration.
3. Apply well decomposed FYM @ 10 t/ha or Poultry Manure @ 2.5 t/ha before the last harrowing.
4. Select the soybean varieties recommended for your area and ensure the availability of seed.
5. Carryout germination test of the available seed which should be minimum 70% in order to have optimum plant population.
6. Ensure availability of other critical inputs like fertilizers, weedicides, fungicides and cultures for seed treatment etc.
7. Ensure the availability of seed treatment material like Penflufen + Trifloxystrobin (1 ml/kg seed) or Thiram + Carboxin (3 g/kg seed) as well as seed inoculation with Bradyrhizobium japonicum and PSM cultures both @ 5 g/kg seed, Trichoderma 10 g/kg seed.
8. For prevention of Yellow Mosaic Virus disease in soybean, seed treatment with Thiamethoxam 30 FS (10 ml/kg seed) or Imidachloprid 48 FS (1.25 ml/kg seed) is recommended, hence it should also be procured.
9. After onset of monsoon, the optimum time for sowing of soybean is Middle of June to First week of July. Sowing of soybean is advised to be done after onset of regular monsoon and about 4 inch rainfall. Sowing on the basis of pre-monsoon rains is not advisable as it might be exposed to long dry spell.